महाभारत की कहानी, विज्ञान की ज़ुबानी

सम्पूर्ण लेख

1. गीता का अदभुत ज्ञान क्या वास्तव में ही भगवान श्री कृष्ण द्वारा महाभारत युद्ध के समय अर्जुन को दिया गया था? क्या वास्तव में ही कुरुक्षेत्र की धरती इस भयानक युद्ध से रक्तरंजित हुई थी? यदि हाँ, तो कब ,कहाँ और किस वर्ष में ?

2. लगभग 5200 वर्ष पहले कुरूवंशी राजा शान्तनु के पुत्र विचित्रवीर्य हस्तिनापुर के सिंहासन पर विराजमान हुए । उनका विवाह काशिराज की दो कन्याओं, अम्बिका तथा अम्बालिका ,से हुआ । विचित्रवीर्य शीघ्र ही स्वर्गवासी हो गए। राजवंश की रक्षा के लिए ,माता सत्यवती की आज्ञा से ,व्यास जी द्वारा अम्बिका के गर्भ से धृतराष्ट्र तथा अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए । धृतराष्ट्र ने गान्धारी के गर्भ से कई पुत्रों को जन्म दिया ,जिनमें दुर्योधन बड़े थे । पाण्डु के पाँच पुत्र हुए युधिष्ठिर ,भीम , अर्जुन ,नकुल तथा सहदेव ।

3. धृतराष्ट्र जन्म से ही अंधे थे, इसीलिए उनकी जगह पाण्डु को राजा बनाया गया। इसी कारण धृतराष्ट्र हमेशा पाण्डु से द्वेष भावना रखते थे । उधर पाण्डु ने कुरुराज्य की सीमाओं का खूब विस्तार तो किया किन्तु अपना सारा राजपाट धृतराष्ट्र को सौंप कर अपनी दोनों रानियों ,कुन्ती तथा माद्री ,के साथ वनों में रहने के लिए चले गये ।

4. द्रोणाचार्य पाण्डु तथा कुरु राजकुमारों के शिक्षक थे । हर प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन के कारण पाण्डवों की सदा सराहना होती थी और कौरवों में ईर्ष्या पैदा होती थी । पाण्डुपुत्रों से इसी ईर्ष्याभाव के कारण दुर्योधन ने कई बार उनका छलकपट से वध करने के प्रयत्न भी किये ,जो विफल रहे । क्योकि युधिष्ठिर सबसे बड़े थे और सर्व गुण सम्पन्न थे , अतः युवावस्था में ही उनको युवराज घोषित कर दिया गया था ।

5. दुर्योधन तथा उनके शकुनि मामा ने ईर्ष्यावश सभी पाण्डवों को लाक्षागृह में जलाकर मारने का षड्यंत्र रचा किन्तु वे सब बचकर निकल गए और एकचक्र नगरी में कई वर्षों तक एक ब्राह्मण के घर निवास करते रहे । इसके बाद व्यासजी के कहने पर पाँचाल राज्य में द्रौपदी स्वंयवर में अर्जुन के द्वारा लक्ष्य भेदन के बाद पाँचों पाँडवों ने द्रौपदी का पत्नीरूप में वरण किया ।

6. इधर लाक्षागृह की घटना के बाद सभी पाण्डवों को मृत समझकर धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को युवराज घोषित कर दिया था । परन्तु द्रौपदी स्वंयवर के पश्चात पाण्डवों के जीवित होने की सूचना प्राप्त होने पर पाण्डवों को माता कुन्ती तथा रानी द्रौपदी के साथ हस्तिनापुर में आमंत्रित किया गया ।

7. भीष्म पितामह ,गुरु द्रौणाचार्य, विदुर तथा धृतराष्ट्र के समझाने पर दुर्योधन ने आधे राज्य के नाम पर खण्डहर समान खाण्डववन पाण्डवों को दे दिया । परन्तु पाण्डवों ने विश्वकर्मा तथा मायादानव की

सहायता से इसमें इन्द्रप्रस्थ नामक भव्य नगर का निर्माण कर लिया । पाण्डवों ने चारों दिशाओं में विजय प्राप्त कर युधिष्ठिर के साम्राज्य का विस्तार करने के पश्चात एक राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया ।

8. दुर्योधन के लिए यह सब असहय था । उसने द्यूतक्रीडा में कर्ण तथा शकुनि की सहायता से छलकपट द्वारा युधिष्ठिर का वैभव ,राज्य तथा द्रौपदी को भी जीत लिया। दुर्योधन, दुशासन तथा कर्ण ने भरी सभा में द्रौपदी का घोर अपमान किया तथा उसे निर्वस्त्र करने का प्रयत्न भी किया । तत्पश्चात् भीम ने इसका बदला लेने की प्रतिज्ञा की । इस प्रकार द्यूतक्रीडा में सब कुछ हारने के बाद जब पाण्डव 12 वर्ष के बनवास तथा तेरहवें वर्ष के अज्ञातवास के लिए जा रहे थे तो उस समय हस्तिनापुर से देखे गए एक सूर्यग्रहण का उल्लेख सभापर्व में है (29/80/2) ।

यह उस सूर्य ग्रहण का सन्दर्भ है जो 15 दिसंबर**,** 3153 ईसा पूर्व हस्तिनापुर से आकाश में दिखाई दिया । स्टेलेरियम द्वारा दर्शाया गया व्योम चित्र देखें –

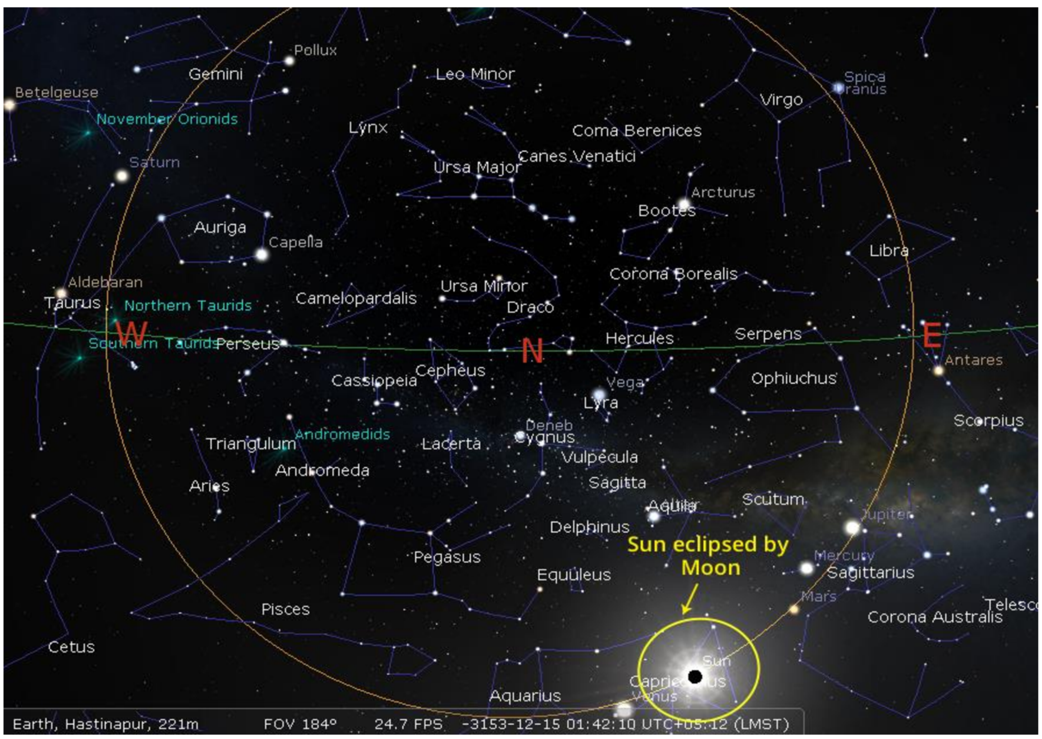

दिसंबर 15,) ईसा पूर्व 315301:42 बजेको सूर्य ग्रहण (, हस्तिनापुर)29° एन, 77°ई(

9. पाण्डव पहले काम्यक आरण्य में गये जहाँ राजा द्रुपद तथा धृष्टद्युम्न ने द्रौपदी के अपमान पर क्षोभ प्रकट करते हुए बदला लेने की बात कही । पश्चाताप् करते हुए युधिष्ठिर को देख मार्कण्डेय ऋषि ने त्रेतायुग में श्रीराम के लिए उनके भाइयों द्वारा की गई कुर्बानियों की याद दिलाई । फिर व्यास जी की मन्त्रणा के बाद युधिष्ठिर ने अर्जुन को दिव्य अस्त्र प्राप्त करने के लिये भेज दिया । अर्जुन ने वर्षों की तपस्या के बाद हिमालय तथा गन्धमादन पर्वतों के पार जाकर देवाधिपति इन्द्र तथा भगवान शिव के

आशीर्वाद से दिव्यास्त्रों को प्राप्त कर लिया। इस प्रकार और अधिक प्रभावशाली तथा शक्तिशाली अर्जुन ने वापिस आकर युधिष्ठिर को सारे घटनाक्रम से अवगत कराया।

10. पाण्डवों को विषम परिस्थितियों में दुखी देखने की इच्छा से दुर्योधन तथा कर्ण द्वैतवन में आए परन्तु वहाँ गान्धर्वों ने दुर्योधन को बंदी बना लिया। युधिष्ठिर की आज्ञावश पाण्डवों ने दुर्योधन को गान्धर्वों से छुड़वाया परन्तु दुर्योधन इसे अपना अपमान समझ गुस्से की आग में जलने लगा। फिर एक दिन दुर्योधन के जीजा जयद्रथ ने द्रौपदी हरण किया परन्तु भीम तथा अर्जुन ने उसका पीछा कर द्रौपदी को छुड़वाया परन्तु बहन का पति जान उसकी जान बख्श दी। उधर युधिष्ठिर को सांत्वना देते हुए मार्कण्डेय ऋषि ने फिर त्रेता युग में हुए सीता हरण से तुलना कर राम व लक्ष्मण की बहादुरी का उदाहरण दिया।

11. तेरहवें वर्ष के अज्ञातवास के लिये पाण्डवों ने द्रौपदी सहित राजा विराट के दरबार में शरण ली। तेरहवें वर्ष के अंत में दुर्योधन ने विराट नगर पर हमला कर दिया। अर्जुन ने विराट नगर के राजकुमार उत्तर के साथ सारथी के रूप में युद्ध में जा कर दुर्योधन की सेना को पराजित कर दिया। इस युद्ध के पश्चात् पाण्डवों की असली पहचान का पता चल गया। राजा विराट ने अर्जुन के बेटे अभिमन्यु के साथ अपनी पुत्री उत्तरा की शादी कर दी। सम्पूर्ण भारतवर्ष से अनेकों राजा इस शादी में शामिल हुए तथा उन्होंने युद्ध में पाण्डवों का साथ देने की प्रतिज्ञा भी की। उधर दुर्योधन ने यह कहकर कि 13वाँ वर्ष पूर्ण होने से एक दिन पहले अर्जुन की पहचान कर ली गई, उन्हें उनका राज्य लौटाने से इंकार कर दिया और इस विषय में भीष्मपितामह तथा गुरु द्रोण की आज्ञा का भी उल्लंघन कर डाला। यही नहीं उसने तो उन्हें केवल पाँच गाँव देने का श्रीकृष्ण का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया। परिणाम यह हुआ कि तेरहवर्ष का वनवास समाप्त हो जाने के दस महीने बाद तक युद्ध को रोकने के लिए किये जा रहे सारे प्रयत्न विफल हो गये तथा युद्ध आवश्यंभावी हो गया।

12. ऋषि व्यास ने कार्तिक पूर्णिमा पर लगने वाले अत्यंत अशुभ चन्द्र ग्रहण तथा उसके उपरान्त उसी माह में 13वीं चन्द्र तिथि पर दिखने वाले एक सूर्यग्रहण (भीष्म पर्व, 6/2/23, 6/3/32) का उल्लेख किया। भीष्मपर्व में कार्तिक पूर्णिमा के दिन इसी चन्द्रग्रहण का संदर्भ है (23/2/6)। उस समय शनि रोहिणी नक्षत्र को पीड़ित करते हुए दिखाई दे रहे थे। यह ग्रहण 26 सितम्बर ई .पू .हस्तिनापुर से देखा गया। प्रस्तुत व्योमचित्र से उस समय की आकाशीय स्थिति को देखें; कार्तिक की पहली पूर्णिमा को ग्रसित चन्द्रमा तथा रोहिणी नक्षत्र शनि से पीड़ित साफ दिखाई दे रहे हैं।

हस्तिनापुर से देखा गया चन्द्र ग्रहण (29°N,77°E) 26 सितम्बर 3139 ईसापूर्व, 13:56 बजे

कार्तिक माह की प्रथम पूर्णिमा को

हस्तिनापुर में दिखे चंद्रग्रहण का विस्तारित दृश्य; 26 सितम्बर 3139 ईसापूर्व 13:56 बजे

13. व्यास जी के अनुसार उसी कार्तिक माह की अमावस्या कोएक सूर्य ग्रहण भी , दिखाई दिया था। जब स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर के प्रयोग से हस्तिनापुर के अक्षांश और वर्ष ईसापूर्व को 3139 अक्टूबर 11 तो पाया कि ,देशांतर से इसका सत्यापन किया

कार्तिक अमावस्या के दिन सॉफ्टवेयर हस्तिनापुर से एक सूर््यग्रहण दिखाती है। चन्द्र तिथियों के अनुसार यह सूर्यग्रहण वाली कार्तिक अमावस्या चंद्रग्रहण वाली कार्तिक पूर्णिमा से 14वीं चन्द्र तिथि में आई क्योंकि 12 सितम्बर को तिथिक्षय हुआ था । नीचे हस्तिनापुर से ईसापूर्व को देखे गए सूर्यग्रहण का चित्र 3139 अक्टूबर 11 दिखाया गया है -

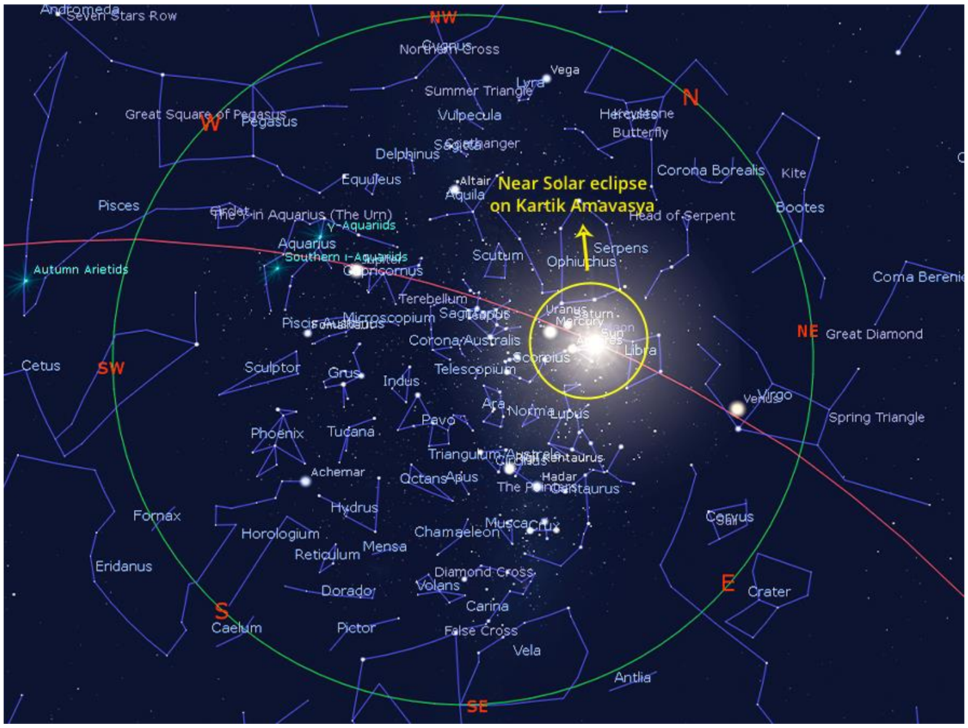

हस्तिनापुर (**29°**उत्तर, **77°**पूर्व), 11 अक्टूबर 3139 ईसापूर्व (**23:32** बजे); सूर्य ग्रहण (स्टेलेरियम **0**.15.2, नासा, जेपीएल डीई 431 एफेमेरिस के प्रयोग के साथ)

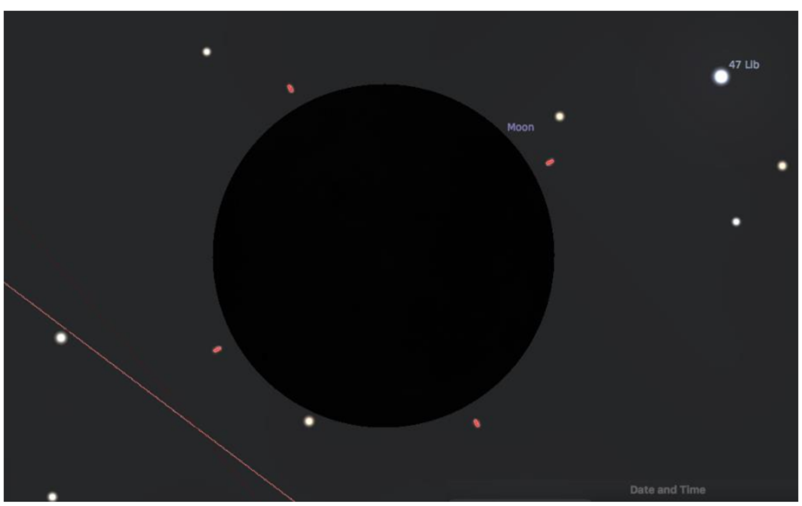

11 अक्टूबर 3139 ईसापूर्व, 23:32 **बजे** अमावस्या का सूक्ष्मदर्शी चित्र, क्योंकि स्टेलेरियम सामान्य दृश्य में चंद्रमा के चरण स्पष्ट नहीं बताता है

14. महर्षि व्यास ने श्लोक संख्या 6/3/14 से 6/3/18 में सूर्यग्रहण से कुछ ही समय पूर्व की ग्रहों और नक्षत्रों की स्थितियों का भी उल्लेख किया है जिन्हें व्यापक स्तर पर अशुभ तथा मानव जाति के लिए विध्वंसकारी बताया गया था। इन सभी स्थितियों को 10 अक्टूबर, 3139 ईसा पूर्व को सायं 19:50 बजे, सूर्य ग्रहण से लगभग एक दिन पूर्व आकाश में स्टेलेरियम स्काई शॉट के अनुसार हस्तिनापुर)29०उत्तर, 77०पूर्व) से देखा जा सकता था।

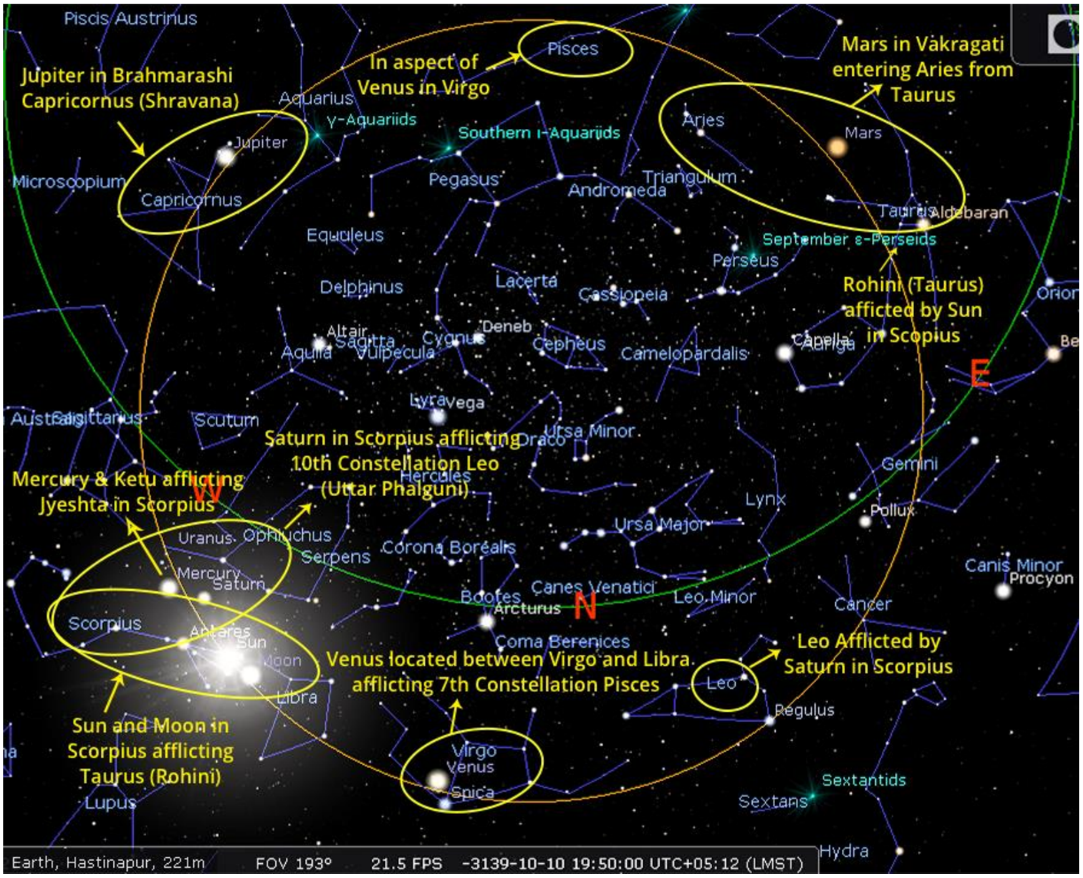

10 अक्टूबर 3139 ईसा पूर्व 19:50 बजे, हस्तिनापुर; महाभारत (6/3/14 से 6/3/18) में वर्णित समस्त खगोलीय स्थितियों को पीले अक्षरों में प्रदर्शित किया गया है; स्टेलेरियम (संस्करण 1.19.0/2019)

स्टेलेरियम के प्रयोग से दिनांक 10 अक्टूबर के उपरोक्त प्रदर्शित आकाशीय दृश्य के अनुसार, सितारों एवं ग्रहों की समस्त स्थितियां, जिन्हें भीष्मपर्व के अध्याय 3 (14-18) में वर्णित किया गया है, उन्हें आकाश में इस प्रकार देखा जा सकता है –

वृषभ राशि से मेष राशि में वक्र गति से वापस जाते हुए मंगल स्वघर में प्रवेश कर रहा है। बृहस्पति श्रावण नक्षत्र (मकर राशि में) में है। सूर्य पुत्र शनि स्कोर्पियस में है और इस प्रकार भगं, यानी उत्तर फाल्गुनी (सिंह राशि) को पीड़ित कर रहा है जो कि स्कोर्पियस से 10 वां नक्षत्र है। शुक्र चित्र तथा स्वाति नक्षत्रों के बीच कन्या राशि (विर्गो) में स्थित है और इस प्रकार अपने स्थान से 7वीं राशि मीन

(पाइसेज) को आक्रांत कर रहा है। बुध तथा केतु स्कॉर्पियस में इंद्र के ज्येष्ठा नक्षत्र को पीड़ित कर रहे हैं। सूर्य एवं चन्द्रमाँ दोनों ही स्वाति में स्थित हैं: अत: वे रोहिणी को पीड़ित कर रहे हैं जो ठीक सामने सातवीं राशी वृषभ (टोरस) में स्थित है। बृहस्पति (पावकप्रभा) ब्रह्मराशि अर्थात मकर राशि में श्रावण के आसपास विचरण कर रहे हैं। वक्र-अनुवक्र गति में लोहितंग अर्थात मंगल ग्रह स्थिर प्रतीत हो रहा है।

15. इस विशेष आकाशीय दृश्य के लिए प्लैनेटेरियम गोल्ड सॉफ़्टवेयर) संस्करण 4.1) के प्रयोग से दिखाई गयी आकाशीय स्थितियों पर एक दृष्टि डालना दिलचस्प होगा, जिसके अनुसार 14 सितंबर, 3139 ईसा पूर्व को ग्रहों नक्षत्रों-की हूबहू यही स्थिति अत्यंत स्पष्टता के साथ प्रदर्शित की जा रही हैं। यह खगोलीय स्थितियाँ सूर्यग्रहण वाली कार्तिक अमावस्या के आरम्भ होने के कुछ ही घंटे पूर्व की हैं। दोनों सॉफ्टवेयर्स के पंचांग में जो 26 दिनों का अंतर है, उसकी व्याख्या पहले ही की जा चुकी है।

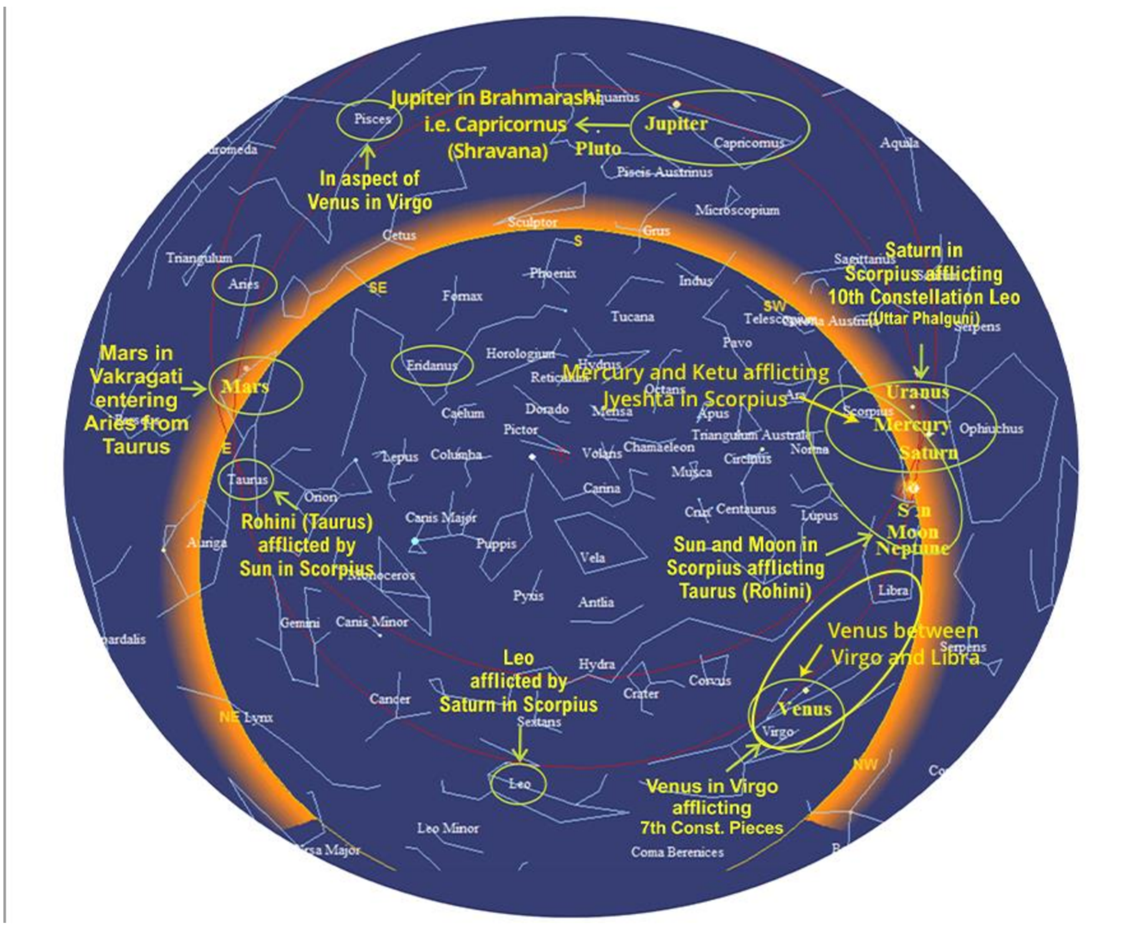

हस्तिनापुर **(29°N, 77°E); 14** सितंबर**, 3139** ईसा पूर्व (**18:30 hrs),** सूर्य ग्रहण वाली कार्तिक अमावस्या से कुछ समय पहले की ग्रहीय स्थितियां **((**प्लेनेटेरियम गोल्ड संस्करण **4**.1 **)**

यह आकाशीय दृश्य अत्यंत विशिष्ट है तथा इसे 14 सितंबर, 3139 वर्ष ईसा पूर्व से पहले या उसके उपरान्त 25920 वर्ष के दौरान किसी भी अन्य तिथि पर पुन: देखा नहीं जा सकता है। परिणामस्वरूप पूर्ण विशवास के साथ ये भी कहा जा सकता है कि यह समस्त ग्रहीय स्थितियां उन वर्षों/दिनों के आसपास नहीं दिखाई दे सकती जो कुछ प्रतिष्ठित विद्वानों ने महाभारत युद्ध की तिथियाँ बताई हैं जैसे 1792 ईसा पूर्व (भटनागर), 1478 ईसा पूर्व (आयंगार), 5561 ईसापूर्व (नीलेश ओक) या फिर 3067 ईसा पूर्व (नरहरी आचार)। यही कारण है कि महाभारत युद्ध की सटीक तिथि 3139 ईसा पूर्व में ही निर्विवाद प्रतीत होती है। 3139 ईसा पूर्व में कार्तिक की पूर्णिमा को एक चन्द्रग्रहण लगा था (प्लेनेटेरियम के अनुसार 31 अगस्त 3139 ईसा पूर्व को तथा स्टेलेरियम के अनुसार 26 सितम्बर 3139 ईसा पूर्व), इसके बाद कार्तिक की अमावस्या को एक सूर्यग्रहण भी परिलक्षित होता है (प्लेनेटेरियम के अनुसार 14 सितम्बर 3139 ईसा पूर्व तथा स्टेलेरियम के अनुसार 11 अक्टूबर 3139 ईसा पूर्व को)। उपरोक्त वर्णित समस्त ग्रहीय स्थितियों को सूर्यग्रहण वाली कार्तिक अमावस्या से कुछ समय पहले देखा जा सकता है।

16. उद्योग पर्व के अनुसार दुर्योधन की 11 अक्षौहिणी सेना तथा युद्धिष्ठिर की 7 अक्षौहणी सेना कुरुक्षेत्र के मैदान में एकत्रित हो चुकी थी। दुर्योधन पुष्य नक्षत्र में 3 अक्टूबर 3139 ई.पू. युद्ध आरम्भ करना चाहता था। परन्तु श्री कृष्ण कार्तिक मास के रेवती नक्षत्र में शांति प्रस्ताव ले कर चल दिए (5/83/7)। उस समय की खगोलीय स्थितियां दिनांक 21 अक्टूबर, 3139 ईसा पूर्व को 18:00 बजे मत्स्य देश (जयपुर क्षेत्र) में उपप्लव्य से आकाश में उस कार्तिक माह में देखी जा सकती हैं, जो 26 सितम्बर 3139 ईसापूर्व को आरम्भ हुआ था। 11 अक्टूबर 3139 ईसा पूर्व को पड़े सूर्यग्रहण के दस दिन उपरान्त ही श्री कृष्ण ने अपने अंतिम शांति अभियान के लिए प्रस्थान किया था।

17. दुर्योधन ने शांति प्रस्ताव ठुकरा दिया अब युद्ध का शीघ्र प्रारम्भ होना निश्चित हो गया। बलराम निष्पक्ष रहने की इच्छा से 29 अक्टूबर 3139 ,ई.पू .वाले दिन पुष्य नक्षत्र में 42 दिन की तीर्थ यात्रा पर चले गये - 6-5/34/9। कर्ण ने श्रीकृष्ण का पाण्डवों के साथ आने का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। परिणाम-स्वरुप 8 नवम्बर 3139 ई.पू . ज्येष्ठ अमावस्या के दिन युद्ध प्रारम्भ हो गया और दोनों तरफ से सेनाएँ आमने सामने आकर डट गयी। इस ऐतिहासिक दिन के आकाशीय दृश्य को अवश्य देखें क्योंकि इसी दिन भगवान कृष्ण ने अर्जुन को भगवद गीता का ज्ञान दिया था -

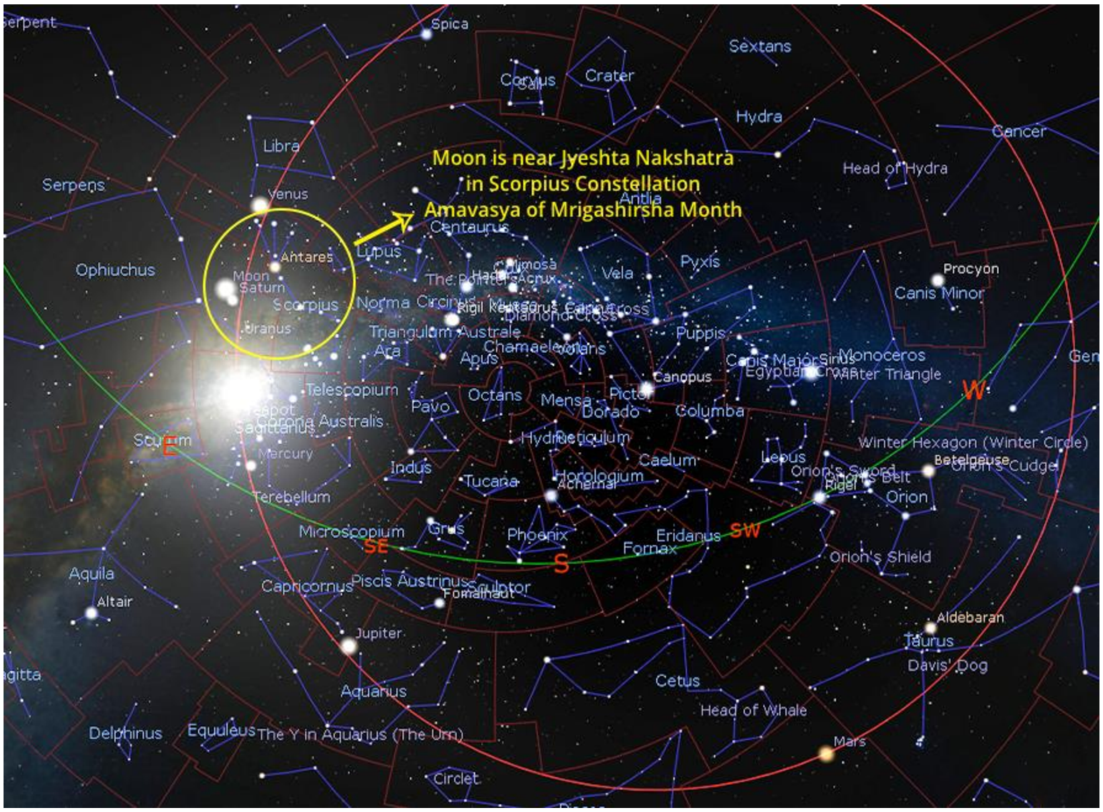

8 नवम्बर 3139 ईसापूर्व, मार्गशीर्ष मास, ज्येष्ठ नक्षत्र में अमावस्या का चाँद, गीता ज्ञान के समय (स्टेलेरियम, संस्करण 0.19.0/2019, नासा, जेपीएल डीई 431 एफेमेरिस)

18. दुर्योधन की ग्यारह अक्षौहिणी सेना तथा धृतराष्ट्र की सात अक्षौहिणी सेना जब कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध के लिये डंट गईं, तो अर्जुन ने अपने सारथि श्रीकृष्ण से रथ को दोनों सेनाओं के मध्य में खड़ा करने के लिए कहा। अपने पितामह भीष्म तथा गुरु द्रोण को देखकर अर्जुन विचलित हो गए और गांडीव धनुष का त्याग कर युद्ध न करने की बात करने लगे। तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से विश्व को गीता का अदभुत ज्ञान देते हुए कहा कि तुम स्वजनों का मोह छोड़ कर धर्म की रक्षा के लिए युद्ध करो ,क्योंकि आत्मा तो अमर है ,केवल शरीर ही नश्वर है –

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणी नैनं दहति पावक :।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूत :।।(23/2)

श्रीकृष्ण ने ये भी कहा कि जब जब भारत अधर्म से घोर पतन की ओर अग्रसर होगा तो भगवान् अवतरित होंगें।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ”।।7/4।।

गीता के इस उपदेश का समय 8 नवम्बर 3139 ई.पू का रहा होगा। उस समय हेमंत ऋतु थी मार्गशीर्ष का महीना था तथा सूर्य दक्षिणायन में थे। यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल का उत्तर देना आवश्यक है। अगर श्रीकृष्ण ने मार्गशीर्ष अमावस्या वाले दिन गीता का उपदेश दिया तो गीता जयंती मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को क्यों मनाई जाती है ? इस प्रश्न का उत्तर भीष्म पर्व के अध्याय 13 में ही उपलब्ध है। वास्तव में संजय पहले दस दिनों के लिए युद्ध के मैदान में ही थे। उन्होंने अर्जुन के भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य के विरोध में लड़ने पर प्रतिरोध तथा युद्ध में उनकी विरक्ति को देखा था। उन्होंने भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए भगवद्गीता के प्रवचन को पूर्ण एकाग्रता के साथ सुना था जब उन्हों ने कहा था की दुर्योधन के अत्याचारों के खिलाफ युद्ध करना अर्जुन का कर्त्तव्य है।

संजय अगले दस दिन भीष्म पितामह के धराशाई होने तक युद्ध के मैदान में ही रहे। तत्पश्चात वो धृतराष्ट्र के पास चले गए और उन्होंने युद्ध से संबंधित घटनाओं का वर्णन करने से पहले यह खुलासा किया कि "शांतनु के पुत्र तथा कौरवों के पितामह मारे गए हैं और वह शरशय्या पर लेटे हुए हैं। इसके बाद ही युद्ध के पूरे घटनाक्रम का वर्णन करते हुए संजय ने भगवान कृष्ण द्वारा दिए गए भगवद गीता के संपूर्ण धर्मोपदेश को धृतराष्ट तथा समस्त संसार के ज्ञान के लिए पुन: वर्णित किया । यह स्पष्ट है की युद्ध मार्गशीष अमावस्या को प्रारम्भ हुआ जिससे पहले श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीतोपदेश दिया। भीष्म पितामह मार्गशीष शुक्ल दशमी को धराशाई हुए तत्पश्चात संजय धृतराष्ट्र के पास पहुंचे । युद्ध के बाद ग्यारहवें दिन मार्गशीर्ष की शुक्ल एकादशी को संजय ने धृतराष्ट्र को गीता का यह उपदेश सुनाया, इसी शुक्ल एकादशी को आज भी हम गीता जयंती के रूप में मनाते हैं।

19. 8 नवम्बर 3139 ई.पू .में प्रारंभ हुए युद्ध में भीष्म पितामह कौरव सेना के सेनापति बने और पहले नौ दिनों में उन्होंने पाण्डवों की अधिकांश सेना का वध कर दिया। दसवें दिन शिखंडी को आगे कर अर्जुन ने भीष्म पितामह पर बाणों की भारी वर्षा की और उन्हें धराशाई करने के पश्चात बाणों की शय्या पर सुला दिया। भीष्म पितामह शय्या पर ही अपने प्राण त्यागने के लिए उत्तरायण की प्रतीक्षा करने लगे।

20. ग्यारहवें दिन से द्रौणाचार्य कौरव सेना के सेनापति बने और उन्होंने विराट और द्रुपद जैसे वीर राजाओं का तथा अभिमन्यु का वध कर दिया। परन्तु पाँचवें दिन पाण्डवों के सेनापति धृष्टद्युम्न द्वारा द्रौणाचार्य का वध कर दिया गया।

21. सोलहवें दिन कर्ण ने कुरुसेना के सेनापति होने का कार्यभार संभाला। परन्तु अगले ही दिन सेनापति कर्ण के रथ का पहिया धरती में धंस गया और उसने अर्जुन से कहा कि पहिया निकालने तक अर्जुन बाण चलाना बंद करें और युद्ध के नियमों का पालन करें। परन्तु तब श्रीकृष्ण ने कहा कि कर्ण को युद्ध के नियमों व धर्म की बात करने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि अभिमन्यु वध के समय उसने स्वयं किसी नियम या धर्म का पालन नहीं किया था द्यूतक्रीडा ,में छलकपट तथा द्रौपदी के चीरहरण के समय भी कर्ण ने किसी नियम या धर्म का पालन नहीं किया था। तभी अर्जुन ने दैवीय अस्त्र का प्रहार कर कर्ण का सिर धड़ से अलग कर दिया।

22. तत्पश्चात अठारहवें दिन शल्य कौरव सेना के सेनापति बने किन्तु दोपहर तक ही युधिष्ठिर ने उनका भी वध कर दिया। इस प्रकार युद्ध तो समाप्त हो गया परन्तु दुर्योधन भागकर द्वैपायन झील में छिप गया और पाण्डवों से बदला लेने के तौर तरीकों पर विचार करने लगा। किन्तु पाण्डवों ने उसे चौहदवें दिन ढूँढ निकाला और भीम ने उसे गदा युद्ध के लिए ललकारा। ठीक उसी समय श्रावण नक्षत्र में 42 दिन की तीर्थ यात्रा के पश्चात बलराम वापस आए। (9/34/5-6)

23. उस दिन गदा युद्ध में भीम ने दुर्योधन के जंघा से नीचे का हिस्सा तोड़ दिया और वह धराशाई हो गया। यह वृत्तान्त 10 दिसम्बर 3139 ई. पू. का है जब चन्द्रमा श्रावण नक्षत्र (केपरीकोर्नस अर्थात मकर) में था, यह पुष्य नक्षत्र में बलराम के तीर्थ यात्रा पर निकलने के एकदम बयालीस दिनों के बाद का ही दिन था; स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर के प्रयोग से प्रिंट किए गए आकाशीय दृश्य को देखते हैं।

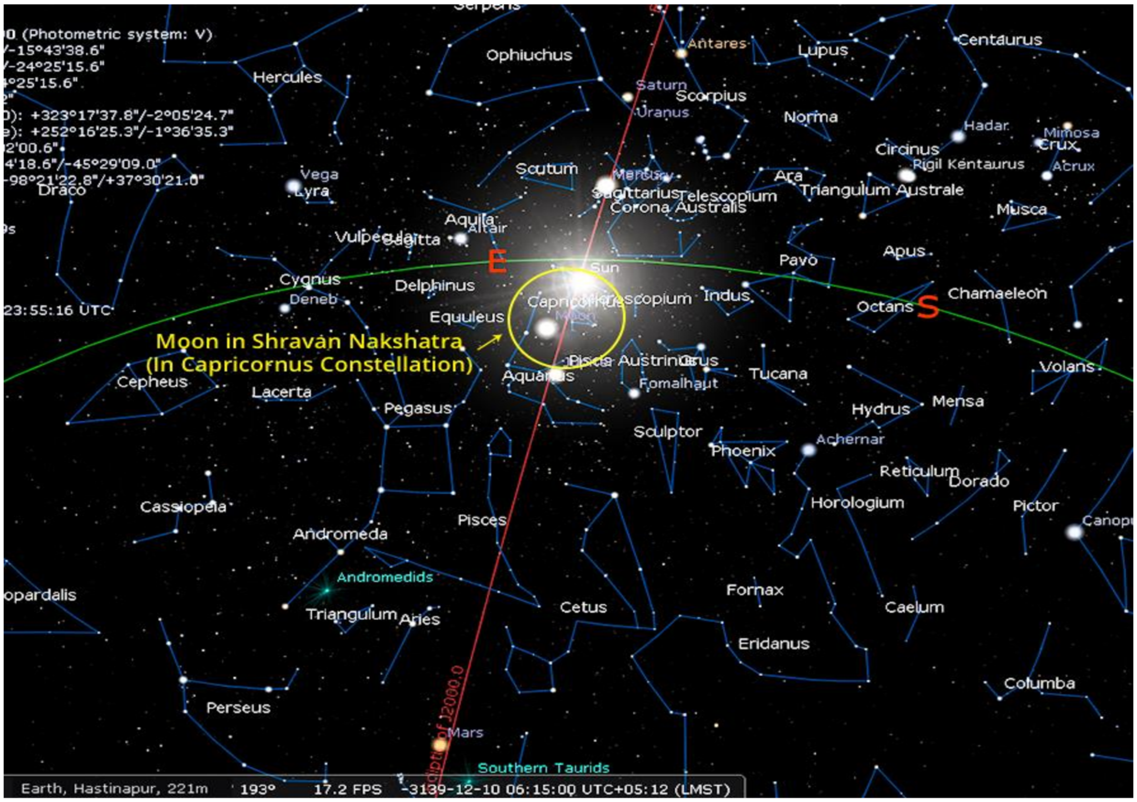

कुरुक्षेत्र (30°उत्तर, 77°पूर्व), 10 दिसंबर, 3139 ईसापूर्व का व्योमचित्र, जब चंद्रमा श्रावण नक्षत्र अर्थात् मकर राशि में थे (स्टेलेरियम)

24. पाण्डव तो धराशाई दुर्योधन को वहाँ छोड़कर चल दिए किन्तु कृतवर्माकृपाचार्य तथा , ,अश्वत्थामावहाँ आकर दुर्योधन को इस अवस्था में देखकर अत्यंत दुखी हुए और पाण्डवों से बदला लेने की योजना बनाने लगे । उन्होंने आधी रात को निश्चिन्त होकर सोयी हुई पाण्डव सेना के सेनापति धृष्टद्युम्न को तथा द्रौपदी के पाँचो पुत्रों को शस्त्रों से काटकर मार डाला । बाकी बचे योद्धाओं को पूरा टेंट जलाकर मौत की नींद सुला दिया । अश्वत्थामा ने उत्तरा के गर्भ को नष्ट करने के लिए भी एक अस्त्र चला दिया परन्तु श्रीकृष्ण ने उत्तरा के गर्भ की उस समय रक्षा की । उत्तरा का वही गर्भस्थ शिशु परीक्षित, पांडवों के स्वर्गारोहण के लिए प्रस्थान के बाद राजसिंहासन पर आसीन हुआ ।

25. महाभारत के इस भयानक युद्ध में लगभग सभी पुरुषों का वध हो गया था । पिता , भ्राता ,पति ,तथा पुत्रों को खोकर अनाथ स्त्रियाँ आर्तनाद कर रही थी (स्त्री पर्व) । एस्टोनियन बायोसेंटर के एक अध्ययन के अनुसार आज से लगभग 5-6 हज़ार वर्ष पूर्व लिंग अनुपात में 5-4 स्त्रियों की तुलना में एक ही पुरुष बचा था ।

महाभारत काल में सरस्वती नदी तथा पेड़-पौधों के विवरण -

महाभारत में सरस्वती नदी के अनेकों सन्दर्भ हैं जो इंगित करते हैं कि उस समय यह विशाल नदी कई स्थानों पर सूखती जा रही थी. बलराम इसी नदी के किनारे बसे तीर्थ स्थानों की यात्रा करने निकले थे । शल्य पर्व के अध्याय 37 में कहा गया है कि सरस्वती नदी के किनारे उन पवित्र तीर्थस्थलों में स्नान करने और दान में धन देने के बाद बलराम ने सप्त-सारस्वत नामक तीर्थ की यात्रा की। वहाँ उन्होंने नदी के किनारे विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों, पेड़-पौधों को देखा, जैसे कि - बेर, इङ्गुद, प्लाक्ष, अश्वत्थ, विभीतिका, कंकोला, पलाश, करीरा, पिल्लू, किंशुक, बिल्व, अम्रतक, और पारिजात इत्यादि वृक्षों से भरा था। यह कदली के सबसे खूबसूरत बागानों से भरा था। जल, फल और पत्तियों पर निर्भर रहने वाले तपस्वियों की उपस्थिति से यह स्थान और अधिक पवित्र हो गया था। वेद मन्त्रों के जाप से यह स्थान गुंजायमान रहता था।

शल्यपर्व में वर्णित सरस्वती नदी के तटों पर स्थित उन पौधों एवं पेड़ों के विषय में प्रासंगिक जानकारी, जहाँ पर बलराम जी ने तीर्थयात्रा की थी

क्रम संख्या	**महाभारत में संस्कृत नाम**	**वैज्ञानिक नाम**	**सामान्य नाम:** अंग्रेजी **और हिंदी**	**संदर्भ: कांड: पर्व/अध्याय/श्लोक**
1.	Amrataka / आम्रातक	*Spondia spinnata*	जंगली आम, अम्बडा	IX./37/63
2.	Aswattha / अश्वत्थ	*Ficus religiosa*	पीपल, पिंपल्ला, बोधि	IX./37/61
4.	Badari / बदरी	*Zizyphus mauritiana*	बेर, बोरा	IX./37/61
5.	Bilwa / बिल्वा	*Aegle marmelos*	बेल, बिल	IX./37/63
6.	Inguda इङ्गुद	*Balanites roxburghii*	इंगुडी, हिंगोली, हिंगुन	IX./7/61
7.	Palasha पलाश	*Butea monosperma*	किंशुक, Forest Flame,	IX./37/62
8.	Karira करीरा	*Capparis decidua*	खैर, कैर	IX./37/62
9.	Parijata पारिजात	*Nyctanthesar bortristis*	हरसिंगार, Khurasli	IX./37/63
10.	Plantains कदली	*Musa balbisiana*	Banana, केला, कदली	IX./37/64
11.	Vibhitaka विभीतक	*Terminalia bellirica*	बहेड़ा, बिभीतक	IX./37/61

26. पुरातात्त्विक प्रमाणों ने सिद्ध किया है कि हड़प्पा स्थल कहलाने वाले स्थान वास्तव में महाभारत काल के वैदिक स्थल थे -

महाभारत की कहानी, विज्ञान की ज़ुबानी पुस्तक में अनेकों प्रमाण दिए हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि युद्ध में भाग लेने वाले राज्य भारत वर्ष में स्थित थे और उन के उत्खनित स्थलों का कार्बन तिथिकरण खगोलीय तिथियों का समर्थन करता है! इस पुस्तक की सबसे बड़ी उपलब्धि वो मानचित्र है, जिसमें महाभारत युद्ध में भाग लेने वाले सभी राज्यों की भौगोलिक स्थितियां, उन में स्थित लगभर 3000 वर्ष ईसा पूर्व की कार्बन तिथियों वाले पुरातात्त्विक स्थलों की जीपीएस प्लोटिंग के साथ दी गयी है! हड़प्पा स्थलों के रूप में वर्णित किये जाने वाले स्थान वास्तव में महाभारत काल के वैदिक स्थल थे।

इस मानचित्र में महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से लड़ने वाले राज्य लाल रंग में तथा पांडवों की ओर से भाग लेने वाले राज्य नीले रंग में; उनमें स्थित उत्खनित स्थलों की जीपीएस प्लॉटिंग के साथ उसी रंग में दिखाए गए हैं -

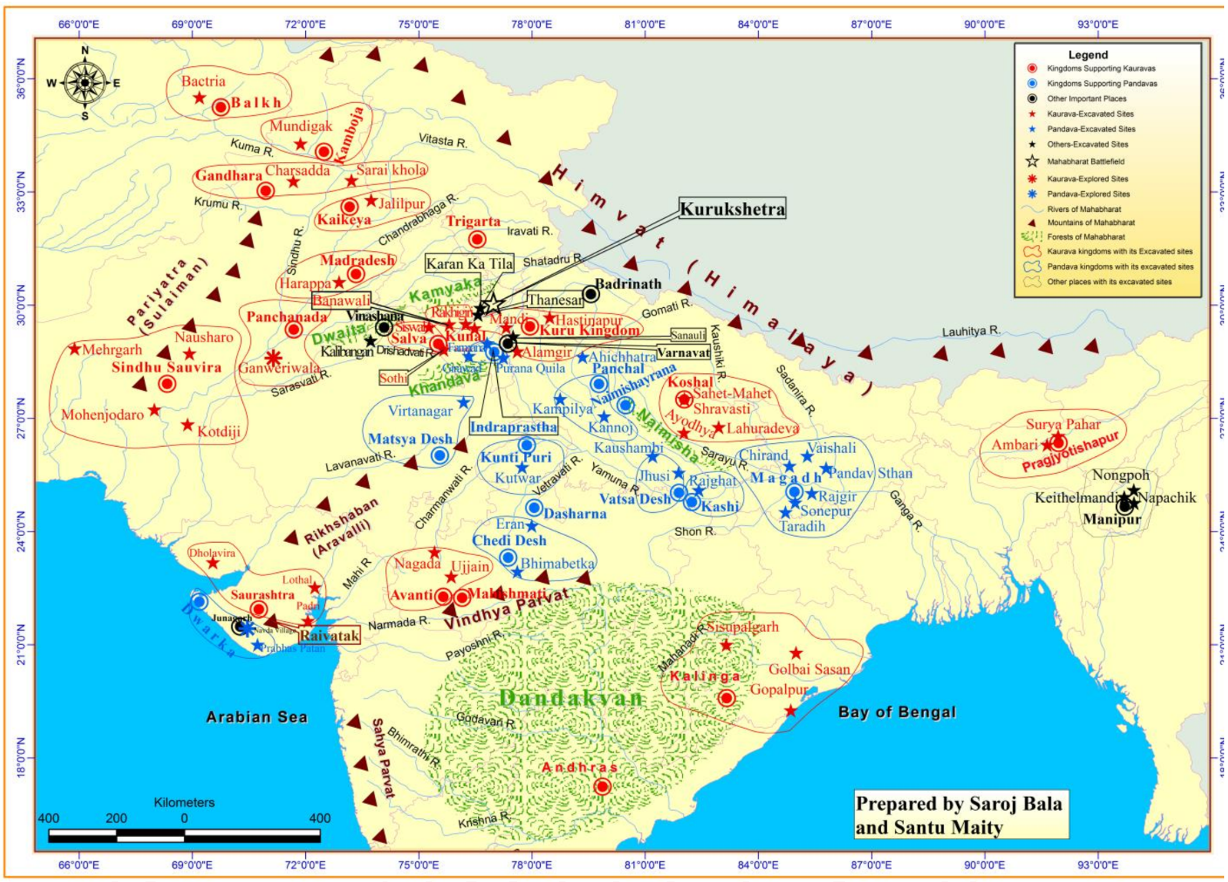

लाल रंग में दिखाए गए राज्य कौरवों की ओर से लड़े (कोष्ठक में उत्खनित स्थलों के नाम) –

कुरु (राखीगढ़ी, कुणाल, बनवाली, हस्तिनापुर), बल्ख (बेक्टरिया), काम्बोज (मुंडीगाक), गांधार (सरायखोला), कैकेय (जलीलपुर), माद्रदेश (हड़प्पा), सिंधु सौवीरा (मेहरगढ़, नौशारो और मोहनजोदड़ो), शालव (सोठी और सिसवाल), पंचनद (गनवेरीवाला), माहिष्मती (महेश्वर), अवंती (उज्जैन और नागदा), सौराष्ट्र (लोथल और पादरी), कोशल (लहुरादेव, श्रावस्ती और सहेत-महेत),

कलिंग (गोपालपुर), प्रागज्योतिषपुर (सूर्य पहाड़ और अंबारी)

नीले रंग में दिखाए गए राज्य पांडवों की ओर से लड़े (कोष्ठक में उत्खनित स्थलों के नाम) –

इंद्रप्रस्थ (पुराना किला, फरमाना और गिरवाड़), द्वारका (प्रभास पाटन व ढोलावीरा), मत्स्य देश (विराटनगर), पांचाल (कम्पिल्य, कन्नौज और अहिछत्र), वत्स देश (झूँसी और कौशाम्बी), दशारण (टोकवा और हेतापट्टी), चेदिदेश (एरण और भीमबेतका), काशी (राजघाट), मगध (चिरंद, वैशाली, राजगीर और सोनपुर)

27. महाभारत युद्ध की समाप्ति के पश्चात जब युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ ,उसके बाद उन्होंने रणभूमि में मारे गये सभी वीरों का दाह संस्कार किया तथा स्त्रियों को भी सांत्वना दी I उधर शर-शय्या पर आसीन भीष्म पितामह उत्तरायण के आरम्भ होने की प्रतीक्षा कर रहे थे और अंतत :वह दिन भी आ गया- अनुशासनपर्व के अनुसार यह माघ ,शुक्लपक्ष की सप्तम तिथि थी तथा उस समय चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र के पास थे (28-26/167/13) I हस्तिनापुर से स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर से 14 जनवरी 3138 ईसापूर्व को प्रात: 7:20 पर लिए गए आकाशीय दृश्य को देखें, जब सूर्य ने उत्तरायण की ओर यात्रा आरम्भ कर दी थी; चन्द्रमा की स्थिति रोहिणी नक्षत्र के पास थी और माघ शुक्ल सप्तमी थी। यह एक अनूठी चन्द्रतिथि थी जो केवल 3138 वर्ष ईसा पूर्व और उसके आसपास के वर्षों में देखी गयी। ग्रहों-नक्षत्रों की हूबहू यही स्थितियाँ किसी और दिन; विशेषकर 5561 ईसापूर्व, 3067 ईसापूर्व, 1792 ईसापूर्व, या 1478 ईसापूर्व में नहीं देखी जा सकती थीं; इसलिये भी कई अन्य वैज्ञानिकों और विद्वानों द्वारा महाभारत युद्ध की निश्चित की गयी तिथियां विश्वसनीय नहीं हैं। देखें व्योम चित्र -

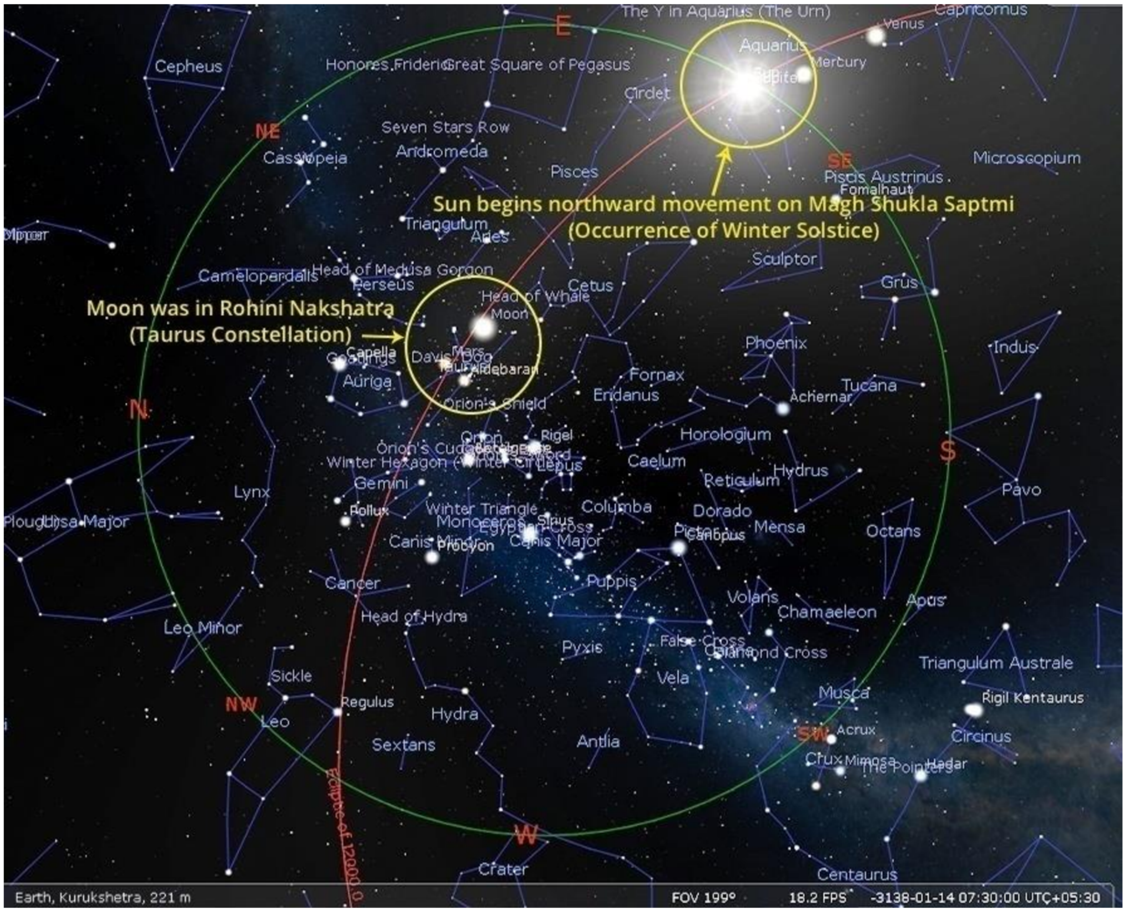

हस्तिनापुर, 29°N 77°E: 14 जनवरी, 3138 ईसापूर्व प्रात:7.20; सूर्य ने उत्तरायण की यात्रा आरम्भ की ही थी; चन्द्र रोहिणी के पास था एवं यह माघ शुक्ल सप्तमी थी - स्टेलेटेरियम 0.19.0

चूंकि यह आकाशीय दृश्य महाभारत युद्ध की तिथि निर्धारण करने के लिए एक महत्वपूर्ण सूचक है, इसलिए प्लेनेटेरियम सॉफ्टवेयर का उपयोग करके भी इन खगोलीय स्थितियों का सत्यापन किया गया। प्लेनेटेरियम के व्योमचित्र ने 25-26 दिन पहले 19 दिसंबर 3139 ई.पू. को माघ शुक्ल सप्तमी वाले दिन हूबहू वही आकाशीय दृश्य पेश कर दिया, जब चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र में थे और सातवीं राशि वृश्चिक अर्थात स्कोर्पिअस से शनि रोहिणी को पीड़ित कर रहे थे। इसके अगले ही दिन अर्थात माघ शुक्ल अष्टमी को भीष्म का स्वर्गवास हुआ जब उन्होंने अपनी देह का त्याग कर दिया।

28. इसके पश्चात महाराज युधिष्ठिर प्रजापालन के कार्य में संलग्न हो गये । कुछ समय बाद उन्होंने अश्वमेध यज्ञ कर बहुत धन दौलत का दान किया । उधर महाभारत के विनाशकारी युद्ध से तंग आकर शांति स्थापना के उद्देश्य से श्रीकृष्ण यादवों, गोपियों तथा विधवा स्त्रियों को लेकर द्वारिका चले गये ।

29. छत्तीस वर्ष तो शांतिपूर्वक निकल गए परन्तु फिर स्थिति नियंत्रण से बाहर होने लगी और चारों तरफ विनाश दृष्टीगोचर होने लगा। उन्हीं दिनों द्वारिका से दिखाई देने वाले एक सूर्यग्रहण का उल्लेख महाभारत के मौसल पर्व में है, जिसे पूर्णिमा के बाद तेरहवीं तिथि में आई अमावस्या के दिन देखा गया (16/2/18-19)। सूर्यग्रहण द्वारका से 29 मार्च 3102 ईसापूर्व को देखा गया था; स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर द्वारा दर्शाया आकाशीय दृश्य देखें :–

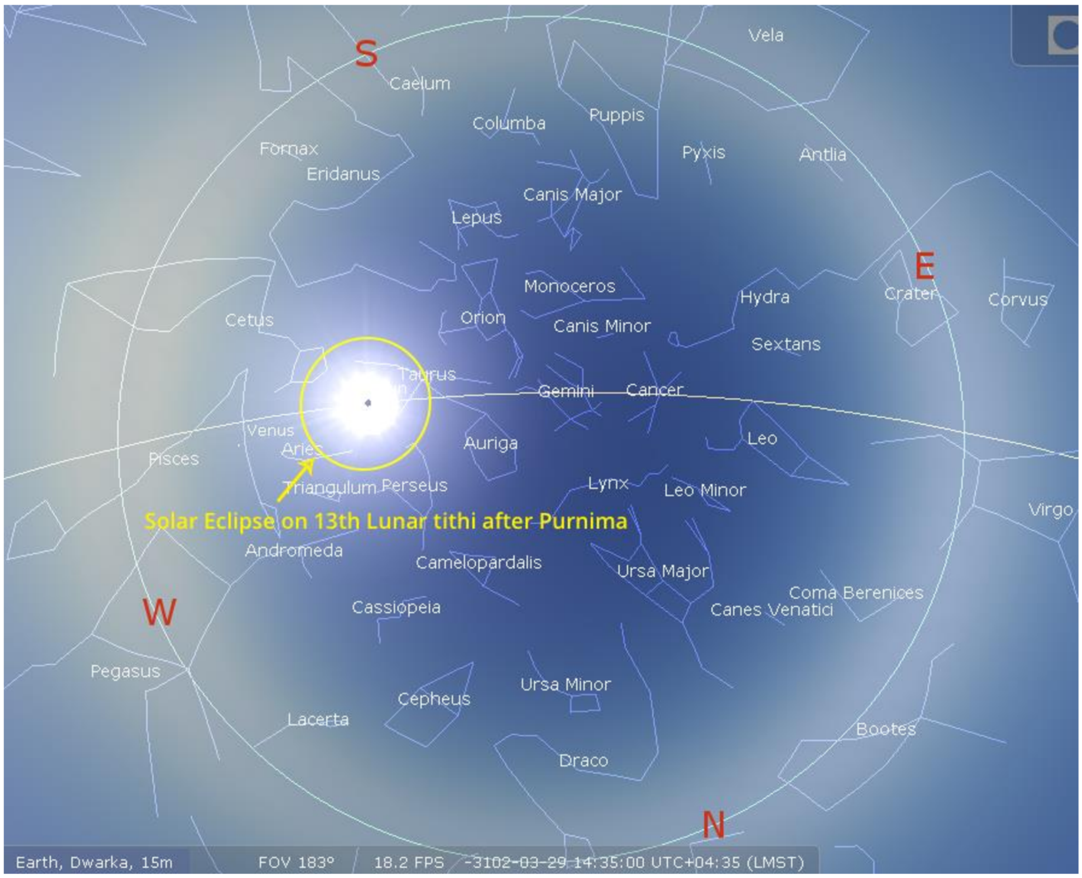

29 मार्च 3102 ईसापूर्व, द्वारका (23°उत्तर, 69°पूर्व) से पूर्ण सूर्य ग्रहण देखा जा सकता है (खगोलीय वर्ष 3102 तथा ऐतिहासिक वर्ष 3103)

30. इसके पश्चात द्वारिका में भारी मारकाट मची यदुवंशी एक दूसरे का वध कर रहे थे। बलराम की मृत्यु हो गई तथा वासुदेव जी भी स्वर्ग सिधार गये। उन्हीं दिनों सुनामी जैसे समुद्री तूफान में द्वारिका नगरी का भी विनाश हो गया। श्री कृष्ण का सन्देश पाकर अर्जुन ने द्वारका की ओर प्रस्थान किया। श्री कृष्ण अपने महाप्रयाण का समय समीप जान कर, अपनी इन्द्रियों पर काबू पा कर योग मुद्रा में बैठ गए, परन्तु इसी बीच

एक शिकारी का तीर पैर में लगने से श्री कृष्ण का भी महा प्रयाण हो गया। अर्जुन ने अनेकों लोगों का अंतिम संस्कार किया।

31. द्वारिका में हुई इस विनाश लीला तथा श्रीकृष्ण के महाप्रयाण की सूचना पाकर युधिष्ठिर ने सिंहासन त्याग दिया। परीक्षित का राज्यभिषेक कर वो अपने भाइयों तथा द्रौपदी के साथ भारत भ्रमण के पश्चात स्वर्गारोहण के लिए प्रस्थान कर गये। इस घटनाक्रम के शीघ्र बाद सातों ग्रहों का एक अदभुत संयोग मीन राशि में दिखाई दिया। देखें 19 फरवरी, 3101 ई.पू. को हस्तिनापुर से आकाश में दिखाई दिया यह दृश्य, जब वृहस्पति, शुक्र, चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, बुद्‌ध तथा शनि पूर्वी क्षितिज में मेष राशि के प्रवेश बिंदु के इर्द-गिर्द एकत्रित हुए दिखाई दे रहे थे। शायद ग्रहों का यही अदभुत संयोग कलियुग के प्रारंभ के साथ जोड़कर देखा जाने लगा। यह खगोलीय वर्ष 3101 तथा ऐतिहासिक वर्ष 3102 था।

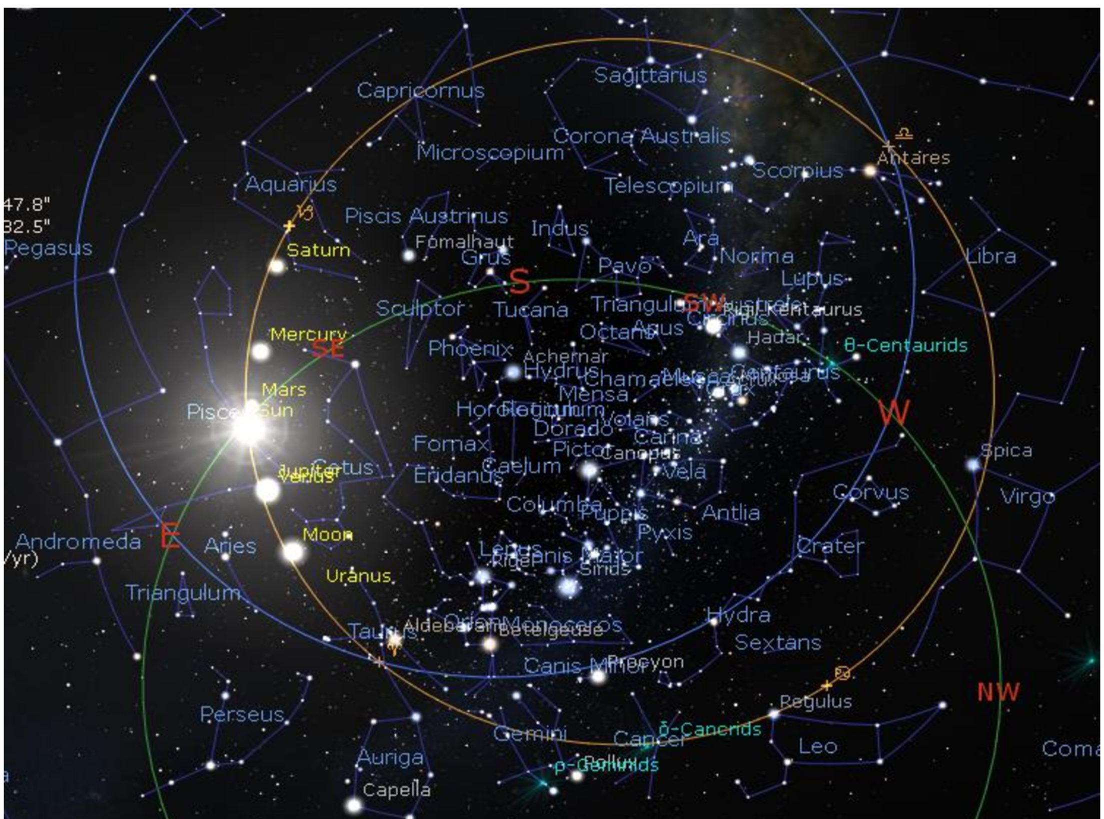

दिल्ली, भारत; 19 फरवरी 3101 प्रात: 7:20 बजे ; सातों ग्रह मेष के प्रवेश बिंदु के आसपास हैं (स्टेलेरियम)
खगोलीय तिथि 19 फरवरी 3101 ईसापूर्व, तथा ऐतिहासिक तिथि 19 फरवरी 3102 ईसापूर्व

भारत के करोड़ों लोग विश्वास करते हैं कि कलियुग का प्रारंभ 19 फरवरी 3102 ईसापूर्व हुआ था. ग्रंथीय साक्ष्य भी कलियुग का आरम्भ 3102 ईसा पूर्व ही बताते हैं। 7वीं शताब्दी के प्रख्यात राजा चालुक्य के प्रसिद्ध ऐहोले शिलालेख में कहा गया है कि महाभारत युद्ध के बाद कलियुग के 3735 वर्ष बीत चुके हैं और शालिवाहन युग का 556वां वर्ष चल रहा है। इसका अर्थ यह हुआ कि कलियुग का 3736वाँ वर्ष शक सम्बत के 556 में चल रहा था, जो कि 634 (556+78) ईस्वी के बराबर है। इस प्रकार कलियुग का प्रारम्भ 3102 ईसा पूर्व (3736 – 634) ही बनता है।

32. **पुरातात्त्विक साक्ष्य - महाभारत के युद्ध में भाग लेने वाले राज्यों के मानचित्र को एकबार फिर से देखें** I उस समय भारतवर्ष एक विशाल राष्ट्र था तथा इसकी विशाल सीमायें थीं, जिनमें भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तुर्कमैनीस्तान, ताजीकिस्तान, तिब्बत आदि में स्थित लगभग सभी राज्य व रजवाड़े सम्मिलित थे I इस मानचित्र में युद्ध में भाग लेने वाली लगभग सभी रियासतों को दर्शाया गया है I इनमें 20 ऐसे महाजनपद हैं, जिनमें पुरातात्त्विक उत्खननों के माध्यम से पता चला है कि 2500 वर्ष ई.पू. से पहले इन स्थानों पर संस्कृति व सभ्यता का उदय हो चुका था I इनमें शामिल हैं – गांधार, कम्बोज, मत्स्य, मथुरा, शूरसेना, कुरु, पंचाल, उज्जैन, अवन्ती, चेदी, वत्स, काशी, कौशल, मल्ल, मगध, वृज, अंग तथा अश्मक आदि I

33. कौरवों की राजधानी हस्तिनापुर गंगा तट पर, कृष्ण की मथुरा यमुना तट पर तथा कुरुक्षेत्र का मैदान सरस्वती नदी के समीप स्थित थे; इसीलिए महाभारत में इन तीनों नदिओं का सन्दर्भ अनेकों बार मिलता है I पुरातात्त्विक उत्खननों में मिली कलाकृतियों की कार्बन डेटिंग ने इन स्थलों में प्रफुल्लित हो रही सभ्यता का सीधा सम्बन्ध 5000 ई.पू. से 2500 ई.पू. के साथ स्थापित कर महाभारत के 3000 वर्ष ई.पू. से सम्बंधित होने के खगोलीय तथ्यों का पुष्टिकरण किया है I

34. पिछले 50-60 वर्षों में सिन्धु, सरस्वती तथा गंगा क्षेत्रों में पुरातत्त्वविदों ने अनेकों स्थलों पर और अधिक निचले स्थलों पर उत्खनन किये हैं, जिन्होंने भारतीय सभ्यता की प्राचीनता को कुछ सहस्राब्दियों तक पीछे धकेल दिया। जैरिज ने मेहरगढ़ में, श्री वसंत शिंदे ने राखीगढ़ी में तथा श्री राकेश तिवारी ने लहुरादेवा में उत्खनन करवाए और वहां मिले नमूनों तथा कलाकृतियों का तिथिकरण 7000 वर्ष ईसा पूर्व से 4000 वर्ष ईसा पूर्व का आया, जो साधारण मान्यता से 2-3 हज़ार वर्ष पीछे का समय है। श्री दीक्षित तथा डॉक्टर मनी ने अपने कई लेखों में इन निष्कर्षों का पुष्टीकरण किया है।

35. अध्ययन तथा शोध के इन सभी प्रयत्नों से यह निष्कर्ष निकला कि अधिकांश तथाकथित प्रारंभिक हड़प्पा और परिपक्व हड़प्पा स्थल महाभारत काल के वैदिक स्थल थे । वे उन राज्यों का हिस्सा थे जिन्होंने मानवता के इतिहास में अब तक लड़े गए सबसे विनाशकारी युद्ध में भाग लिया था। पूरे भारत के क्षत्रिय राजा या तो पांडवों, या फिर कौरवों की ओर से युद्ध में भाग लेने के लिए पंहुचे थे क्योंकि उस समय प्रचलित मान्यता थी कि कुरुक्षेत्र में युद्ध के दौरान, जो क्षत्रिय वीरगति प्राप्त करेगा, वह स्वर्ग जाएगा। पाठकों की सुविधा के लिए एक नक्शा भी तैयार किया गया है, जिसमें महाभारत युद्ध में भाग लेने वाले राज्यों के साथ-साथ उन राज्यों के भीतर उत्खनित स्थलों की स्थिति का वर्णन किया गया है। यह उन राज्यों के अस्तित्व की पुरातनता को निर्धारित करने में मदद करता है।

36. ऊपर दिए सभी तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि महाभारत की कहानी काल्पनिक नहीं है अपितु यह वह ग्रन्थ है जो प्राचीन वैदिक भारत के वास्तविक इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है। वेद उस काल के ज्ञान का संकलन थे जबकि रामायण और महाभारत उस युग के इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस सिंधु-सरस्वती-गंगा सभ्यता में लोथल में विश्व का सबसे प्राचीन डॉकयार्ड था (बिष्ट 1991, 1997) तथा ढोलावीरा में विश्व की सबसे पहली जल प्रबंधन प्रणाली थी। ढोलावीरा में ही प्राचीनतम साइनबोर्ड था (राव 1991; बिष्ट 1991), मोहनजो-दाड़ो में विशालतम स्नानागार तथा कई कुँए थे (व्हीलर 1945; डेल्स 1965)। लोथल जैसे स्थलों पर सबसे प्राचीन अर्ध कीमती पत्थरों के मोती बनाने वाले कारखाने थे (राव 1991), बनावली में दुर्ग के बाहर दोहरी खाई वाली प्राचीनतम व्यवस्था थी (बिष्ट 1987) तथा लहुरादेवा में विश्व की प्राचीनतम चावल और जौ की खेती होती थी। यह वह सभ्यता है जो महाभारत काल में, उसके पहले तथा उसके पश्चात फली फूली, पल्लवित हुई एवं अधिकाँश उत्खनित हड़प्पा स्थल उस युग से संबंधित राज्यों के क्षेत्रों में स्थित थे।

37. आइए हम आधुनिक युग के महामानव व महान वैज्ञानिक डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के इन शब्दों को समझें तथा आत्मसात करें, "भारत की मूल संस्कृति ऐतिहासिक काल से पहले की है। यह इस्लाम तथा ईसाई धर्मों के आगमन से पूर्व भारत में प्रफुल्लित हो रही थी I .... सभी भारतीय अपनी महान विरासत में सामूहिक राष्ट्रीय गर्व का अनुभव करते हुए एक ऐसे उज्जवल भविष्य का निर्माण करें जिसमें शांति तथा समृद्धि के साथ साथ सृजनात्मकता तथा उत्कृष्टता का समावेश हो। हमारा अतीत हमेशा हमारे साथ रहता है; इसे राजनीतिक स्वार्थों में पड़ कर नष्ट नहीं करना चाहिए अपितु दृढतापूर्वक सहेज कर रखना चाहिये।“”

सरोज बाला
भारतीय राजस्व सेवा से सेवानिवृत्त
वेदों पर वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान की पूर्व निदेशक

Email: sarojbala044@gmail.com

Website: sarojbala.com/RigvedatoRobotics.com

YouTube Channel: https://www.youtube.com/c/RigvedatoRobotics

Blog: https://sarojbala.blogspot.com

Documentary: https://www.youtube.com/watch?v=GASsp7IYjnY&t=122s